सब्जी व्यवसाय एवं ग्रामीण हाट में संलग्न महिलाएँ

सुचित्रा मिंज*

वर्तमान समय में सब्जी का उत्पादन व्यवसायिक स्तर पर हो रहा है। आज सब्जी पूर्णतः एक व्यवसायिक वस्तु बन चुकी है। सब्जी की खेती कर किसान एवं उत्पादनकर्ता तुरंत नगदी प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए सब्जी का व्यवसाय बड़ी तेजी से फूल–फल रहा है। सब्जी व्यवसाय का दूसरा पहलू पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। हमारे दैनिक जीवन में पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हरी पत्तिदार एवं रेशेदार सब्जियों का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। सब्जी न केवल आहार के गुणवत्ता को बढ़ाता है, बल्कि आवश्यक पोषक तत्व यथा–कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, लवण तथा प्रोटीन इत्यादि भी प्रदान करते हैं, जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है।[1] सब्जियों में मिलने वाले रेशे हमारे शरीर के बेकार पदार्थों को निकालने एवं कोलेस्ट्रोल को खत्म करने में हमारी सहायता करते हैं। इसके सेवन से कई प्रकार की बिमारियों से बचा जा सकता है। नियमित रूप से विभिन्न प्रकार के सब्जियों को खाना मोटापे और हृदय के धमनियों की बीमारी के खतरे को कम करने का एक तरीका है। सब्जियों में पाये जाने वाले विटामिन, केरोटिन व विटामिन 'सी' हमारे शरीर के रक्त वाहनियों में वसा को जमा होने से रोकते हैं और कई प्रकार के बीमारी के खतरे को भी रोकते हैं।

पिछले कुछ वर्षों से सब्जी की खेती में तीव्रता से विस्तार हुआ है। इसका मुख्य कारण एक महत्वपूर्ण भोजन के रूप में सब्जियों को अधिक महत्व देना है। आज सब्जी एक नगदी फसल के रूप में बाजार में अपना सिक्का जमा चुकी है। इसलिए एक स्वास्थ्य और उन्नत राष्ट्र के लिए सब्जियों के उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता है। सब्जी हाट–बाजार की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। यह अल्प समयावधि में विकसित एवं तैयार होने वाला फसल भी है। इस दृष्टिकोण से सब्जियों का उत्पादन अत्यधिक उपयुक्त है। सब्जियों का उत्पादन सामान्य फसलों की तुलना में 5 गुणा से अधिक लाभ देता है।

नगरीय क्षेत्रों में सब्जी उत्पादन हेतु भूमि का बेहतर उपयोग एवं वर्तमान क्षमता में सुधार इसकी नई नियोजन तथा भूमि उपयोग विश्लेषण की ओर इंगित करता है। परिवर्तनशील जनसंख्या एवं आर्थिक, जैविक तथा परिस्थितिकीय समस्याएँ ऐसी चिंतनीय दशा में है कि भूमि संरक्षण एवं इसकी उचित उपयोग आवश्यक हो गया है।[2] इस दृष्टि से सब्जी उत्पादन में भूमि उपयोग अत्यंत समीचिन है। राँची के कुल कृषि योग्य भूमि का 13.42 प्रतिशत क्षेत्र में सब्जी का उत्पादन होता है। मिट्टी के अनुकूल विभिन्न तरह की सब्जी के उत्पादन के लिए नये सब्जियों की एक प्रणाली विकसित की गई, जिसके फलस्वरूप राँची जिला का सुदूर ग्रामीण क्षेत्र भी हर मौसम के सब्जियों के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। फलस्वरूप जिला में सब्जी विक्रय के कई महत्वपूर्ण केन्द्र विकसित हो गए हैं। इन प्रमुख केन्द्रों में रातु, बेड़ो, मांडर, चान्हों, सोंस, ब्राम्बें, इटकी, चुटीया, नामकुम, पिठोरिया, कांके, बुण्डू, ओरमांझी, तमाड़, सिल्ली एवं मखमंद्रों प्रमुख है। यहाँ वार्षिक हजारों टन विभिन्न किस्म की सब्जियों का उत्पादन होता है। साथ ही व्यवसायिक रूप से प्रदेश में प्रतिवर्ष लगभग 200 करोड़ रूपये की हरी सब्जियों के बीज पैदा किये जाते हैं। राँची जिला के प्रखण्डवार कुल कृषि योग्य भूमि तथा सब्जी उत्पादन में संलग्न भूमि एवं उसका प्रतिशत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 1

राँची जिला के प्रखण्डवार कुल कृषि योग्य भूमि तथा सब्जी उत्पादन में संलग्न भूमि एवं उसका प्रतिशत

क्र.सं.	प्रखण्ड	कुल कृषि योग्य भूमि (हेक्टेयर में)	सब्जी उत्पादन में संलग्न भूमि (हेक्टेयर में)	प्रखण्ड की भूमि में सब्जी कृषि का %
1.	कांके	23,141	2,435	10.52

* शोध छात्रा, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

2.	नामकुम	35,884	2,751	7.67
3.	बेड़ो	28,412	3,578	12.59
4.	मांडर	20,182	6,863	34.00
5.	लापुंग	13,469	1,860	13.80
6.	चान्हों	17,766	2,649	14.90
7.	रातू	19,263	2,118	10.99
8.	सिल्ली	18,504	5,213	28.17
9.	ओरमांझी	12,572	5,018	39.91
10.	अनगड़ा	24,075	3,518	14.61
11.	बुढ़मू	22,972	2,845	17.36
12.	बुंडू	18,290	3,245	17.74
13.	तमाड़	33,573	6,843	20.38
14.	सोनाहातु	28,061	4,518	16.10
15.	नगड़ी	37,203	2,918	7.84
16.	इटकी	36,942	1,507	4.07
17.	खेलारी	19,342	306	1.58
18.	राहे	42,515	2,516	5.91
	राँची जिला	4,52,166	60,700	13.42

श्रोत : झारखण्ड का आर्थिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन – 2011–12

आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि जिला में सब्जी उत्पादन 13.42 प्रतिशत (हेक्टेयर) भू–भाग में किया जाता है। राँची जिला में प्रखण्डवार सब्जियों का उत्पादन असमान है। सब्जियों का उत्पादन कई स्थिति पर निर्भर करता है। जिसमें से प्रमुख निम्नांकित है।[3]

1. सिंचाई के साधनों का विस्तार।
2. यातायात के साधनों का विस्तार।
3. कुल कृषि योग्य भूमि का विस्तार।
4. बिक्री केन्द्रों की उपलब्धता।
5. बिक्री केन्द्रों की दूरी।
6. नगरों से समीपता आदि।

राँची शहर में हाट का विकास एवं इसका जीवित रहना सब्जियों के कारण ही संभव हुआ है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि राँची जैसे बड़े शहर में हाट का अस्तित्व मुख्य रूप से सब्जी उत्पादन के कारण ही संभव हुआ है। सब्जी उत्पादन के लिए राँची की जलवायु उत्तम एवं अति उपयुक्त है। जिला में अप्रैल से नवम्बर तक विभिन्न सब्जियों के बेमौसमी रूप से पैदा करने की असीम संभावनाएँ है इसी कारण राँची को 'प्राकृतिक हरित गृह' भी कहा जाता है। हाटों में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल है, जो पुरूषों को सब्जी व्यवसाय के क्षेत्र में कड़ी टक्कर दे रही है। सब्जी उत्पादन से लेकर विक्रय तक में महिलाओं की अहम् भूमिका सामने आ रही है। आज ग्रामीण हाट में संलग्न महिला सब्जी व्यवसाय से जुड़कर न केवल आर्थिक लाभ कमा रही है बल्कि उन्होंने समाज में एक पहचान भी बनाई है। आज हाटों में सब्जियों के दैनिक विक्रय द्वारा जिला के बहुत से किसान, श्रमिक व महिलाएँ लाभान्वित हो रहे हैं। पठारी क्षेत्र होने के कारण यहाँ के अधिकांश भाग में किसान की आर्थिक स्थिति सब्जियों के उत्पादन तथा व्यापार पर निर्भर करती है। जिला के 50 प्रतिशत कृषक परम्परागत खाद्यान्नों के उत्पादन से हटकर सब्जी उत्पादन कर हाटों में बेचते हैं और आर्थिक रूप से लाभान्वित हो रहे हैं। जिला में आज सब्जी उत्पादन बड़े पैमाने पर हो रहा है तथा यहाँ के स्थानीय हाट से सब्जियाँ अन्य

जिलों तथा राज्यों को भी भेजी जाती है। यहाँ के हाट से सब्जी निर्यात करने का मुख्य कारण निम्नाकिंत है–

1. सब्जी उत्पादन व्यवसायिक रूप से हो रहा है :–

किसानों का सब्जी के उत्पादन की ओर उन्मुख होने का मुख्य कारण यह है कि यह नगदी प्राप्त करने का सबसे अच्छा माध्यम है। विभिन्न प्रकार के सब्जी का उत्पादन कर किसान इसे सीधे हाट में बेचकर नकद रकम प्राप्त करते हैं। राँची का विस्तृत बाजार भारी मात्रा में सब्जियों के खपत का केन्द्र बना है, जिससे सब्जी किसानों का मनोबल तथा आत्मविश्वास बढ़ा है।

2. महिलाओं की सहभागिता :–

महिलाओं का रोजगार तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पदार्पण करने से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और वे पहले की अपेक्षा आर्थिक रूप से ज्यादा स्वतंत्र हुई है। आज सब्जी उत्पादन एवं हाट में विक्रय के क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है। महिलाएँ बड़ी संख्या में अपने घर परिवार के काम–काज के साथ खेतों तथा हाटों में सब्जियों के विक्रय का कार्य संभालने लगी है। हाट में संलग्न महिलाएँ बड़ी कुशलता से सब्जी का विक्रय एवं पैसे का जोड़ घटाव कर लेती है।

3. रोजगार के साधन :–

आज सब्जी उत्पादन तथा विक्रय एक व्यवसाय के रूप में उभर रहा है। किसान परिवार के पुरूष तथा महिला दोनों उत्पादन के इस क्षेत्र को व्यवसायिक रूप से देखने लगे हैं। सब्जी उत्पादन आज एक रोजगार माना जा रहा है। जिसे हाटों एवं बाजारों में बेचकर नगद रकम की प्राप्ति संभव है।

4. बेमौसमी सब्जियों की प्राप्ति :–

राँची जिला मौसमी एवं बेमौसमी सभी प्रकार की सब्जियों के उत्पादन के लिए अनुकूल है। अतः यहाँ इसके उत्पादन एवं व्यवसाय की पर्याप्त संभावनाओं के कारण हाटों में वर्ष भर पर्याप्त मात्रा में मौसमी एवं बेमौसमी सब्जी उपलब्ध रहते हैं। राँची के हाटों में वर्ष भर पाये जाने वाले बेमौसमी सब्जियों में प्रमुख है– टमाटर, गाजर, बीट, खीरा, फूलगोभी, पतागोभी, मशरूम, धनियाँ पत्ति, शिमला मिर्च इत्यादि।

5. अधिक उत्पादन क्षमता :–

किसान सब्जी उत्पादन को अपने लिए व्यवसाय के रूप में इसलिए अपना रहे हैं क्योंकि सब्जी उत्पादन से अनाज वाली फसलों के उत्पादन की अपेक्षा प्रति ईकाई अधिक उत्पादन होता है तथा बाजार में अनाजों की अपेक्षा अधिक मूल्य मिलता है।

6. खाद्य समस्या सुलझाने में सहायक :–

राँची एक पठारी क्षेत्र है इस क्षेत्र में सब्जी उत्पादन न केवल नगद प्राप्ति में सहायक है बल्कि इससे काफी हद तक खाद्य समस्या का भी समाधान होता है। सब्जी से आवश्यक पोषक तत्वों की आवश्यकता की पूर्ति होती है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या शाकाहारी है तथा आज सब्जियों की आवश्यकता राज्य में प्रति व्यक्ति 280 ग्राम है जबकि हमारी उत्पादकता 246 ग्राम प्रति व्यक्ति है। अतः सब्जी की आवश्यकता पूर्ति के लिए सब्जी उत्पादन को प्रोत्साहन दिया जा रहा है ताकि हमारे खाद्य समस्या का समाधान हो सके।

7. एक से अधिक फसलों की उगाही :–

सब्जी उत्पादन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के पीछे एक कारण यह भी है कि सब्जी का वर्द्धन काल बहुत कम होता है। एक वर्ष में एक ही भूमि से कई फसलों का उत्पादन किया जाता है इसलिए सब्जी व्यवसाय को कृषकों एवं महिलाओं द्वारा पंसद किया जा रहा है।

इस प्रकार सब्जी व्यवसाय में अपार संभावनाओं को देखते हुए महिलाएँ भी इस क्षेत्र में सक्रिय योगदान दे रही है और पुरूषों के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। सब्जियों के उत्पादन में व्यवसाय के कई महत्वपूर्ण श्रोत जैसे– पौधा उत्पादन, बीज उत्पादन, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, कृषि संसाधन परीक्षण, बगीचे के जमीन का सही उपयोग आदि काफी महत्वपूर्ण है।[4] राँची में भी सब्जियों के उत्पादन के कई स्वरूप उपलब्ध है इसके अंतर्गत पाक गृह बगान, बाजार के लिए बागवानी, बीज उत्पादन बागवानी आदि प्रमुख है।

राँची नगर के इर्द–गिर्द के प्रखण्डों में बड़े पैमाने पर सब्जियों का उत्पादन तीव्र नगरीकरण का परिणाम है। इसका कारण यह है कि अपेक्षाकृत अधिक प्रति व्यक्ति आय वाली नगरीय अर्थव्यवस्था में सब्जियों की मांग अधिक होती है। सब्जियों के विपणन की दृष्टि से यहाँ सब्जी बाजार के तीन स्वरूप पाये जाते है।

1. स्थानीय बाजार
2. क्षेत्रीय बाजार एवं
3. राष्ट्रीय बाजार आदि।

राँची में सब्जियों का विपणन इन तीनों स्तरों पर किया जाता है। स्थानीय स्तर पर जिला में कई हाट एवं बाजार हैं जो दैनिक या साप्ताहिक होते हैं। सब्जियों के विपणन में यहाँ स्पष्ट पदानुक्रम पाया जाता है। यहाँ स्थानीय ग्रामीण हाट छोटे किसानों के विपणन केन्द्र होते हैं। यहाँ उपभोक्ता सीधे कृषक से सब्जी खरीदते है। बड़े व्यवसायी छोटे ग्रामीण हाटों से सब्जी खरीदते है[5] तथा स्थानीय बाजारों में बेचते हैं और दूसरे राज्यों एवं जिलों को भी सब्जी भेजते हैं। इस प्रकार व्यापारिक तथा विपणन की स्थिति स्पष्ट तौर पर जिले में सब्जी उत्पादन को प्रभावित करता है।

संदर्भ :–

1. कुमार. अरविन्द, (2006), खरीफ फसलों में पोषक तत्वों का प्रबंधन (पठारी कृषि) त्रिमासिक पत्रिका, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, राँची, जनवरी–मार्च 2006, पृ. सं.– 123.
2. मंडल. आर.एन., (1990), लैण्ड यूटिलाइजेशन थियोरी एण्ड प्रैक्टीसेस, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–45.
3. अग्रवाल. ए.एन., (2000), इंडियन एग्रीकल्चर : प्रोब्लम प्रोग्रेस एण्ड प्रोस्पेक्टस, मुम्बई ज्योग्राफिकल मैगजिन, वाल्यूम–6, पृष्ठ संख्या– 48.
4. हैरिस. सी.डी., (1994), द मार्केट एज द फैक्टर इन द लोकलाइजेशन ऑफ इंडस्ट्री इन द यूनाइटेड स्टेट, एनाल्स ऑफ एसोसिएशन ऑफ अमेरिकन ज्योग्राफर्स, पृष्ठ सं. 315–48.
5. आचार्य. एस.एस., (1998), एग्रीकल्चर मार्केटिंग इन इंडिया सम फैक्ट्स एण्ड इमरजींग इसुज, इंडियन जनरल ऑफ एग्रीकल्चर, वाल्यूम–4, पृष्ठ संख्या–118.